संगीत में कलाकार व श्रोता की भूमिका

प्राप्तिः 22.02.2021
स्वीकृतः 15.03.2021

रूकैय्या
संगीत विभाग
रघुनाथ कन्या महाविद्यालय, मेरठ
Email:rukaiyarashid379@gmail.com

सारांश

शास्त्रीय संगीत आध्यात्मिक रस एवं सात्विकता का सौम्य रूप है। मनुष्य प्राचीन काल से ही आनन्द तथा सौन्दर्य की खोज में लीन रहा है। आनन्द तथा सौन्दर्य की सुन्दरत्म कृति को अभिव्यक्त करने वाला 'कलाकार' कहलाता है। कलाकार का उद्देश्य श्रोता या दर्शक के सम्मुख अपनी कला का प्रदर्शन कर उनके ह्रदय में सुप्त कोमल भावनाओ को जाग्रत करना है। श्रोता का कार्य ही कलाकृति का आस्वादन करना है। कलाकार की भूमिका कला प्रदर्शन को सफल बनाने तथा अपने व्यक्तित्व एवं कुशल प्रस्तुतिकरण द्वारा श्रोताओं के ह्रदय से सम्बन्ध स्थापित करने की है। उसी प्रकार श्रोताओं की भूमिका कलाकार के कला कौशल भावपूर्णता आदि को परखना तथा शांत चित्त होकर उक्त प्रस्तुतिकरण का रसास्वादन कलाकार को प्रोत्साहित करना और उसकी उत्कृष्टतम कला का प्रदर्शन करवाना है। कलाकार व श्रोताओं की भूमिकाएँ निम्न हैं।

प्रस्तावना

भारत की सभी कलाएँ यहाँ की आध्यात्मिक संस्कृति से प्रभावित रही है। फिर भी संगीत कला के लिए प्रबुद्ध लोगो के समाज में सदियों से यही धारणा बनी हुई है कि संगीत आध्यात्मिक रस एवं सात्विकता का सौम्य रूप है और यही अखण्ड रस, आनन्द एवं मुक्तावस्था की प्राप्ति का सशक्त और सबल मार्ग है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की मौलिकता उक्त रस की प्राप्ति के द्वारा ही प्रतिष्ठित होती है।

संगीत सर्षष्टि में वह शक्ति है कि जीव मृग एवं सर्प आदि तक अपने तन–मन की सुध–बुद्ध खोकर मस्त हो जाते हैं। संगीत का लक्ष्य व्यक्ति में उदात्त भावनाओं को आरोपित करना है। ह्रदय के भावों का निरन्तर उत्कर्षण होता रहे, तभी संगीत की वास्तविकता परिलक्षित होती है।

मनुष्य प्राचीन काल से ही आनन्द तथा सौन्दर्य की खोज में लीन रहा है। आनन्द तथा सौन्दर्य की सुन्दरत्म कृति को अभिव्यक्त करने वाला 'कलाकार' कहलाता है। जैसे– मधु भक्छिका पुष्पों में मधु संचय करके रखती है वैसे ही कलाकार अपनी कला को अथक परिश्रम से प्राप्त करता है।

एक ओर स्वामी हरिदास जैसे अनेक श्रेष्ठ संतो ने संगीत कला द्वारा आध्यात्मिक उन्नति को तो दूसरी ओर तानसेन जैसे श्रेष्ठ कलाकारों ने संगीत प्रेमियों को संगीत कला का रसास्वादन कराया। कला के प्रदर्शन में कलाकार को विशिष्ठ आनन्द की उपलब्धि होती है और आनन्द प्रदान करना ही कला का उद्देश्य है।

कलाकार कल्पना के माध्यम से सौन्दर्य उत्पन्न करता है। रागों को आलाप, तान, अलंकार, मींड विभिन्न लयकारियाँ, घसीट, आन्दोलन, कण, खटका, गमक, जमजमा, सूत आदि अलंकरणों से सजाया जाता है। सभी अलंकरणों का संतुलित व समुचित प्रयोग राग को रक्ति प्रदान करता है। यह सब कलाकार की कल्पना एवं सृजनात्मक शक्ति पर सम्भव है। संगीत सृजन करते समय कलाकार के अन्तःकरण में ज्ञान भाव से विविध रसों की सृष्टि होती है जिससे संगीत के सौन्दर्य तत्वों का बोध होता है। यह सब कलाकार की स्वयं की साधना संस्कार और अनुभूति पर निर्भर करता है। कला प्रस्तुति के समय कलाकार की आँखों में उसके भावों को देखा जाये, तो उसमें एकाग्रता, योगी, तपस्वी के भाव तथा शान्ति की अनुभूति होगी। इस अवस्था में कलाकार को ईश्वर के समान माना जा सकता है। अपने कला कौशल में दक्ष होना ही कलाकार का गुण है।

कलाकार का निर्माण श्रोतागण करते है। श्रोता अर्थात् सुनने वाला, जिसके लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है, वह मंच प्रदर्शन का प्रमुख अंग है। श्रोताओं का मनोरंजन करने के लिए ही कलाकार द्वारा कला प्रदर्शन किया जाता है। प्रत्येक प्रत्यक्ष कला में कलाकार का उद्देश्य श्रोता या दर्शक के सम्मुख अपनी कला का प्रदर्शन कर उनके हृदय में सुप्त कोमल भावानाओं को जागृत करना होता है। श्रोता का कार्य ही कलाकृति का आस्वादन करना है।

संगीत गतिशील कला है जो प्रतिक्षण व्यक्ति पर प्रभाव डालती है इसीलिए संगीत कला में श्रोता का सम्बन्ध कला की सृष्टि के दष्ढ़ स्तर से बना रहता है। एक ओर तो कलाकारों की अन्तः प्रेरणा तथा दूसरी ओर श्रोता की प्रतिक्रियाओं से प्रेरणा मिलती रहती है जिससे उस संगीत में सूक्ष्म रंगीन रंग भरता रहता है। शास्त्रीय संगीत के सभागार में कई तरह के श्रोता उपस्थित होते हैं, जैसे रसिक श्रोता, विद्वान या पारखी श्रोता, छात्र–छात्राऐं, समीक्षक या आलोचक आदि।

एक कलाकार के लिए यह मार्ग थोड़ा कठिन होता है। कलाकार बनने के लिए उसमें त्याग सब्र और साहस होना चाहिए। उसे एक कठिन मार्ग से गुजरना होता है। बड़े–बड़े ऐसे भी कलाकार हुए, जो गाने में अच्छे थे किन्तु जीवनभर कलाकार की उपाधि प्राप्त नहीं हुई।

अतः निष्कर्ष यही निकलता है कि शास्त्रीय संगीत में प्रदर्शन में कलाकार तथा श्रोताओं की भूमिकाएँ यही है कि कलाकार को अपने कला कौशल को ध्यान में रखते हुए अपने स्तर को ऊँचा उठाने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि हमेशा से कला तथा साहित्य का प्रयोजन लौकिक स्तर पर लोक भावनाओं को प्रतिष्ठित करने के लिए ही होता है। जिससे समाज का उचित विकास होता है। इसके लिए कलाकारों तथा श्रोताओं की ओर से पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। कला प्रस्तुति द्वारा कलाकार में व्यैक्तिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तर को उन्नत बनाने की क्षमता होनी चाहिए। अच्छे कलाकार एवं श्रोताओं की यही भूमिकाएँ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *संगीत रत्नावली* – अशोक कुमार 'यमन', संस्करण–2008, पृ0 **693**।
2. *संगीत मधुबन* – मधु बाला सक्सेना, राकेश बाला सक्सेना, संस्करण–2001, पृ0 **208, 210**।
3. संगीत पत्रिका '*संगीत*' लक्ष्मीनारायण गर्ग, वर्ष 36, अंक–2, फरवरी 1973, पृ0 **14, 15**।